दिनांक 17.04.2021

B.A (Hons) part I
Subject - History
Dr Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
Deptt of History
S.R.A.P College Chakiya

Date: 22.02.20

गुफा वास्तु कला

अशोक के काल में पहाड़ों को काटकर गुफाओं का निर्माण आरंभ हुआ। आरंभिक गुफाएँ सादी एवं सामान्य प्रकार की थी। किन्तु धीरे-धीरे ये गुफाएँ जटिल होती गईं। आरंभिक गुफाएँ गया में बराबर की पहाड़ी तथा नागार्जुनी की पहाड़ी में विकसित की गई थी। आरंभिक गुफाओं का निर्माण बहुत ही सादा था। गुफा के मुख को आयताकार काटा जाता था तथा उसमें रहने के लिए निवास स्थल बनाया जाता था तथा उस निवास स्थल के छत को तथा उसके आयताकार दरवाजे को काली लेप से रंग दिया जाता था। अशोक के द्वारा निर्मित यही गुफा वास्तुकला आगे विकसित होती हुई बौद्ध मंदिर तथा फिर पल्लव शासकों के अधीन हिन्दू मंदिरों में विकसित हुई।

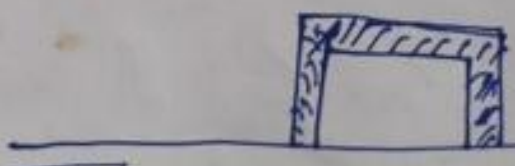

मौर्योत्तर कला

इस काल में भी कला की मूल उत्प्रेरणा भी बौद्ध धर्म ही रही है।

बौद्ध दृष्टिकोण से यह प्रेरित होकर चैत्य, स्तूप एवं विहारों का निर्माण किया गया किन्तु इस काल में निश्चय ही कला के सामाजिक आधार का विस्तार हुआ था। वस्तुतः जैसा कि हमने पीछे देखा कि मौर्य काल राज्य संरक्षण में ही पली एवं बढ़ी थी किन्तु इस काल में शासक वर्ग के अतिरिक्त कुलीन, व्यापारी, भिक्षुक-भिक्षुणियों सभी ने कला को संरक्षण दिया।

चैत्य

चैत्य बौद्धों का पूजा गृह था। यह मौर्यकालीन गुफा वास्तुकला का विकसित रूप है। पहाड़ को काटकर ही चैत्यों का निर्माण हुआ था। सामान्यतः चैत्यों की बनावट आयताकार होती थी किन्तु उसका आगे अर्द्धवृत्ताकार हो जाता था। उसके केन्द्र में भी एक स्तूप होता था जिसकी पूजा की जाती थी। फिर आगे स्तूप की जगह मूर्तियों का निर्माण होने लगा। स्तूप के अंदर रोशनी विद्यमान रहे इसके लिए स्तूप के ऊपर चैत्य के छत को घोड़े के नाल के आकार का काटा जाता था ताकि उससे रोशनी आ सके। यह अपने आप में एक महत्वपूर्ण तकनीकी विकास था।

इस काल में पश्चिमी भारत एवं पूर्वी भारत में बड़ी संख्या में चैत्यों-स्तूपों एवं विहारों का निर्माण किया गया।

पश्चिम भारत में - नासिक, कार्ले, अजन्ता, कन्हेरी

पूर्वी भारत में - अमरावती, एवं नागार्जुनकोंडा

Date
7.07.2021

B.A (Hons) part III
Date 22.02.2022

Subject - History
Dr Deepak Kumar Rajak
Asistant professor (Guest)
Deptt of History
S.R.A.P College, Chakiya

सल्तनतकालीन वाणिज्य-व्यापार।

सल्तनत काल में हम तीन भिन्न प्रकार के व्यापारिक संरचना देखते हैं

① ग्रामीण एवं नगरीय
② नगर एवं नगर के बीच
③ विदेश व्यापार

इस काल में ग्रामीण तथा नगरीय व्यापार में मुख्य सामग्री अनाज तथा कच्चे माल थे। अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रण व्यवस्था के तहत इस व्यापार को प्रोत्साहन दिया था। अब कारवाँ व्यापारियों के द्वारा बड़ी मात्रा में अनाज नगरीय केन्द्र पर पहुँचाए जाते थे। अर्थात् बड़ी मात्रा में ग्रामीण उत्पादन नगरों और कस्बों में लाए गए किन्तु सामान्यतः नगरीय उत्पादन ग्रामीण क्षेत्रों को नहीं पहुँचा। दूसरी तरफ नगर एवं नगर के बीच भी आंतरिक व्यापार की एक संरचना कायम थी। उदाहरण के लिए बंगाल से चीनी एवं सूती वस्त्र अन्य नगरीय केन्द्रों पर भेजे जाते, मेरठ एवं अलीगढ़ की शराब दिल्ली पहुँचती।

इस काल में विदेश व्यापार को भी प्रोत्साहन मिला। पश्चिम में भारत का सम्बन्ध पश्चिम एशिया, मध्य एशिया तथा पूर्वी अफ्रीका के देशों से था वहीं पूरब में भारत का सम्बन्ध चीन तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ था। गुजरात लाल सागर के माध्यम से पश्चिम एशिया से जुड़ा हुआ था। इसी प्रकार गुजरात का भी जुड़ाव फारस की खाड़ी से था। खंभात गुजरात का एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था। सिन्ध में देवल भी एक महत्वपूर्ण बंदरगाह के रूप में स्थापित था। जब AKh बंदरगाह को जीता तो विदेश व्यापार के अंतर्गत

का अपना अलग महत्व था। बंगाल का व्यापारिक जुड़ाव चीन एवं दक्षिण पूर्व एशिया के देशों से था। इस काल में निर्यात की प्रमुख मदें दास, वस्त्र मसाले, नील, अनाज आदि थे। मध्य एशिया को दास भेजे जाते थे जबकि पश्चिम एशिया में नील एवं अनाजों का निर्यात किया जाता था। पश्चिम एशिया के देश अनाजों के लिए भारत पर ही निर्भर थे। उसी प्रकार आयात की प्रमुख मद घोड़े थे। एक विदेशी विवरण के अनुसार लगभग 10,000 घोड़ों का भारत में आयात किया जाता था। इसके अलावा पश्चिमी एशिया से कीमती वस्त्र मंगवाए जाते थे साथ ही [illegible] का भी आयात होते थे। चीनी माल एवं रेशम आदि जैसी विदेशी व्यापारियों [illegible] विकसित वाणिज्य व्यापार की सूचना देती है।

इस काल में व्यापारिक मार्ग रूप में स्थलीय एवं जल मार्ग दोनों प्रयुक्त होते थे। स्थलीय मार्ग के रूप में हिमालय की तलहटी, खैबर दर्रे, बोलन दर्रे के मार्ग प्रचलित थे। दूसरी तरफ जलमार्ग के रूप में हम लाल सागर तथा फारस की खाड़ी का विवरण पाते हैं। मध्य एशिया के व्यापार में खुरासानी व्यापारी सक्रिय थे तो पश्चिम एशिया में मुल्तानी व्यापारी। वहीं दक्षिण पूर्व एशिया के व्यापारियों की विशेष भूमिका थी।